भगत रविदास – सबद ३

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ३४५

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥

सार: उदारता मानवता के प्रति हमारी समझ को विस्तृत करती है। सृष्टि का हर तत्व, सबसे छोटे जीव से लेकर विशालतम प्राकृतिक दृश्य तक, उस सार्वभौमिक ऊर्जा को दिखाता है जो हम सभी को जोड़ती है। दूसरों की मदद करके, हम न केवल उनके हालात संवारते हैं बल्कि अपनी भलाई और संतुष्टि की भावना को भी विकसित करते हैं। यह पारस्परिक मेलजोल एक गहन सच बताता है कि एक-दूसरे का साथ देने और सहारा देने की हमारी कोशिशें शांति और खुशी का एक समुदाय बनाती हैं जिससे दया और जुड़ाव का एक चक्र बनता है जो हम सभी को लाभ पहुंचाता है।

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
बेगमपुरा एक शहर का नाम है। यह शहर लाक्षणिक रूप से मन की शांतिपूर्ण स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।

दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
इस शहर में, दर्द या चिंता के लिए कोई जगह नहीं है। यह एक शांत मन का प्रतिनिधित्व करता है जिसने प्रकृति की इच्छा को स्वीकार किया है।

नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
यह शहर किसी भी वस्तु पर कर नहीं लगाता। यह घोषणा विचारों की स्वतंत्रता को बनाए रखने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
यह शहर असफलता के डर से मुक्त है और चरित्र-पतन के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाता। यह गुण एक ऐसे मन का प्रतिनिधित्व करते हैं जो नकारात्मकता को छोड़ देता है और सकारात्मकता को अपनाता है। (१)

अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
मुझे अपनी मातृभूमि में यह उत्कृष्ट शहर प्रदान किया गया है। यह आत्म-चिंतन से प्राप्त ज्ञान का प्रतीक है।

ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥
इस शहर में, सदैव कल्याण है। यह परोपकार को मूर्त रूप देने के गुण का प्रतिनिधित्व करता है। (१)(विराम)

काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
स्थिर और संतुलित, यह शहर स्वायत्त सम्राट है। यह एक पूर्ण संतुलन वाले मन का प्रतीक है।

दोम न सेम एक सो आही ॥
इस शहर में सामाजिक स्थिति का कोई दर्जा नहीं है। हर व्यक्ति को समान माना जाता है जो समानता को बढ़ावा देने वाली मानसिकता को दर्शाता है।

आबादानु सदा मसहूर ॥
यह शहर सदैव फलता-फूलता है इसलिए यह लोकप्रिय है जो इस विचार का प्रतीक है कि सकारात्मक विचार समृद्धि और संतोष को जन्म देते हैं।

ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
इस शहर के निवासी धन और समृद्धि से भरपूर हैं। यह एक ऐसे मन का प्रतिनिधित्व करता है जो आध्यात्मिक ज्ञान से सम्पन्न है और उसे व्यवहार में भी उतारता है। (२)

तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
इस शहर में, निवासी अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र रूप से घूमते-विचरण करते हैं। यह संदेह और निर्णय से मुक्त खुले विचारों की स्वतंत्रता की अवस्था है।

महरम महल न को अटकावै ॥
यह शहर एक ऐसे समुदाय का घर है जहाँ हर कोई एक-दूसरे को जानता है जिससे बाधाओं से मुक्त माहौल बनता है। यह सृष्टि की परस्पर संबद्धता को समझने का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ द्वैत ज्ञानोदय में बाधा नहीं डालता है।

कहि रविदास खलास चमारा ॥

चमड़े का काम करने वाले रविदास कहते हैं कि वह शुद्ध हो गए हैं। इसका मतलब है कि जब एकत्व को समझा जाता है तब यह जागरूकता की शुद्ध अवस्था होती है।

जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥

जो कोई भी इस शहर में रहता है, वह मेरा दोस्त है जो विविधता में एकता को अपनाने के इरादे का प्रतीक है। (३)(२)

तत्त्व: भक्त रविदास 'बेगमपुरा' की कल्पना एक ऐसे बदलाव लाने वाले समाज के रूप में करते हैं जहाँ दुख की कोई जगह न हो और जहाँ सद्भाव, समानता और मानवता फले-फूले। यह अवधारणा शांतिपूर्ण जीवन को दिखाती है जिसमें दुख, डर, भेदभाव, चिंता और अपमान से मुक्त सोच शामिल है। वह बताते हैं कि सारी सृष्टि के गहन पारस्परिकता के जुड़ाव को समझने से उन्हें स्पष्टता मिली है। जो लोग विविधता में एकता की सराहना करते हैं और उसका जश्न मनाते हैं, वह उनके सच्चे साथी हैं जो यह दिखाते हैं कि कोई द्वैत आत्मबोध के ज्ञानोदय की यात्रा में बाधा नहीं बन सकता।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com